कैसे चौधरी चरण सहि ने जमींदारी को खत्म कर कसिानों को दलिाया असली हक!

चौधरी चरण सहि का नाम सुनते ही भारतीय कृषि के उन सुनहरे पन्नों की याद आती है, जहाँ जमींदारी को मटिा कर कसिान वर्ग को सशक्त कयिा गया। उनका जीवन काल, संघर्ष और उपलब्धियाँ आज भी युवा जमींदार बंदी वरिोधी आंदोलनों को दशिा देती हैं।

जन्म 23 दसिम्बर 1902, मेरठ (हापुड़), कसिान परविार स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी, 1950 का जमींदारी उन्मूलन अधनियिम, 1967 में यूपी के पहले गैर कांग्रेसी CM, 1979 में भारत के 5वें प्रधानमंत्री, 1987 में नधिन, राष्ट्रीय कसिान दविस उनका जन्मदनि।

उनके शुरुआती सालों में धूल मट्टिी और फसल खेतों के बीच बीते, जसिसे ग्रामीण समस्याओं की गहरी समझ वकिसति हुई। शकि्षा के लएि उन्होंने:

>> 1923 में आगरा कॉलेज सेवज्ञिान स्नातक (बीएससी)

>> 1925 में इतहिास मेंएम.ए.

>> 1927 में मेरठ कॉलेज सेएलएलबी

महात्मा गांधी और सरदार पटेल के वचिारों से प्रेरति होकर उन्होंने नमक सत्याग्रह (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में भाग लयिा, कई बार जेल का सामना कयिा।

स्वतंत्रता के बाद, उत्तर प्रदेश में कृषि और राजस्व मंत्री के पद पर रहते हुए उनके सबसे बड़े योगदान का ववरिण नीचे दयिा गया है:

>> 1950 जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार अधनियिम 1952 में लागू, जसिसे असीमति जमींदारी समाप्त हुई।

>> कसिान वर्ग को लेंडगि, बीज, और तकनीकी सहायता के लयिेकृषि वकिास वभिागको पूर्ण मंत्रालय का दर्ज़ा मलिा।

>> हरति क्रांति के साथ मलिकर, अहीर जाट गुर्ज़र राजपूत (अजगर) गठबंधन ने मध्यवर्ती कसिान वर्ग को आर्थकि रूप से सशक्त कयिा।

1967 में कांग्रेस से अलग हुए, उन्होंनेभारतीय क्रांति दल (BKD)की स्थापना की और 3 अप्रैल को यूपी के पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री बने। इस दौर में उन्होंने:

>> पारंपरकि उच्च-जातीय राजनैतकि वर्चस्व को तोड़ने के लयिेअजगर गठबंधनको सशक्त कयिा।

>> कृषि में नई तकनीकों को अपनाने के लयि कसिान प्रशकि्षण केंद्र खोले।

1979 में पाँचवें प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल छोटा (28 जुलाई 14 जनवरी) था, लेकनि उन्होंने कई अहम नर्णिय लयिे:

>> ग्रामीण वकिास वभिाग को पूर्ण मंत्रालय का दर्ज़ा दलिाया।

>> नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि वकिास बैंक) की स्थापना के लयि वैचारकि ढांचा तैयार कयिा।

29 मई 1987 को 84 वर्ष की आयु में उनका नधिन हुआ। दलि्ली में यमुना तट पर उनका समाधि स्थल कसिान घाट के नाम से

प्रसिद्ध है। उनके जन्मदिन, 23 दिसम्बर, को हर सालराष्ट्रीय किसान दिवसके रूप में मनाया जाता है। भारत सरकार ने उनको मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित करने की घोषणा की, जिसे 30 मार्च 2024 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उनके पोते जयंत चौधरी को सौंपा।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

अधिनियम ने ज़मींदारों को उनकी जमीन से हटाया, जिससे भूमि वितरण न्यायसंगत हुआ। साथ साथ कृषि ऋण, बीज वितरण और सिंचाई योजनाओं को तेज किया गया, जिससे उत्पादन में 30 40% की उछाल आया।

हां, आज भी अहीर, जाट, गुर्जर और राजपूत समुदायों के बीच सामुदायिक सहयोग उनके सामाजिक राजनीतिक मॉडल से प्रेरित है, विशेषकर उत्तर प्रदेश और हरियाणा के ग्रामीण चुनावों में।